विषय : 'मुझे जो कहना था'

सच्ची बात

मैं,
बारिश की एक बूँद हूँ,
आसमान की आँसू हूँ,
सबों से छोटा हूँ।
लेकिन मेरी आवाज़ उठा तो
धरती के सबकुछ भर से निकलेंगा।
क्योंकि मुझे जो कहना था,
वह ठीक है।
क्यों इस धरती में
हरियाली कम हो गई?
हरियाली हमारी मित्र था,
हमारी आसमान की सहेली भी।
बारिश हरियाली केलिए है,
और हरियाली बारिश केलिए।
लेकिन हरियाली के बिना धरती
पंख के बिना पक्षी जैसे।

हमारी सहेली हमारी धरती
बिना जीवन से दुःखी है।
कुछ के बारे में पेश करने केलिए
उसकी आवाज़ फुसफुसाहट होंगे।
सुनो, मेरी आवाज़
क्या धरती में लाल रंग?
क्योंकि अब एक दूसरा को मार लिया
मनुष्य मनुष्यों को भी।
देखो, वहाँ कुछ आदमी हैं
अपनी ही विजय है उनका लक्ष्य
विजय केलिए मारने को भी
उनका मन तैयार है।
और यह सुनो मेरी आवाज़
क्या यहाँ सभी धूप भर गए?
वह नशीली दवाएँ के हैं,
युवपीढ़ी की नाशी का है।
उसको ये नहीं जानता कि,
क्या यह धरती में होता है?
इसका अस्तित्व का अवस्था भी
उनको नहीं जानता।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2023 ജനുവരി 3 – 7 കോഴിക്കോട്
61st Kerala School Kalolsavam Kozhikode, Jan. 3

Item Code: 641 Participant Code: 111

हम सोचता था कि , धरती को,
मनुष्य है सच्ची मित्र ।
तो व इस प्रकार की शैतानी है,
यह पता नहीं ।
ये बात बिताने पर मेरी आवाज़,
फुसफुसाहट से तब्दील हो गए।
क्योंकि धरती में सुनता हूँ
कोई बूढ़े आदमी की आवाज़
उस आवाज़ दुख का है।
उन बूढ़े को कोई नहीं ,
बच्चे नहीं कोई नहीं,
व वृद्धाश्रम में है।
क्या यह समस्या नहीं ?
सच में समस्या है ।
बूढ़ों कि आवाज़ न सहकर
आसमान और धरती दुःखी है।
यह बड़ी बात है,
यहाँ कोई आदमी है ,
जो इसके बारे में शब्द करेंगा,
उनको मेरी प्रणाम ।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

कैंसर का दवा नहीं;
नुक़सान भी आपत्ती है।
लेकिन उनके ऊपर रहने समस्या है,
धरती की दुःखी समस्या।
एक दिन मरुस्थल बने,
इस धरती में नल्दील होते वक्त,
उनको मालूम हुआ कि,
मेरी कहना सच था।

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)